''मैं पानी हूं''

मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा'

''मैं पानी हूं''

मैं पानी हूँ
मेरे रूप अनेक
अमृत हूँ!
मैं विष भी हूँ .....

पहले सब अमृत ही था
विष तो मानव ने बनाया
ऐसा विकास का चक्र चलाया
मेरा अमृत रूपी अस्तित्व मिटाया

मैं पानी हूँ
मेरे द्वारा ही होवे नव निर्माण
अपनी सीमा तोडूं. तो
होवे महाविनाश .....

मानव खिलवाड़ करे न प्रकृति से
मुझको बांधे न अपनी सीमाओं में
जहर न घोले शुद्ध हवाओं में
प्रदूषण न फैलाए नदी, पोखर, सागर, कुओं में

मैं पानी हूँ
जन्म-मृत्यु मुझसे ही हैं
मैं जीवन की बहती धार
मैं ही हूँ सृष्टि का आधार
मैं पानी हूँ .....

उठ आई अम्बर में घनघोर घटा

उठ आई अम्बर में घनघोर घटा
मोर नाचते, कोयल गाती, उड़ती गोरी की लटा
रिमझिम-रिमझिम बूँदें गिरती
प्रकृति की कलियाँ-कलियाँ खिलती
उठ आई .....

तपती धरती अब तृप्त हुई
जल-संकट की घड़ी अब खत्म हुई
धरती पर मनमोहक यौवनता छाई
कृषक घर खुशियों की सौगात आई
उठ आई .....

सभी वर्षा जल का संरक्षण करें
धरती का अमृत कलश रिचार्ज करें
तब ही कल सुनहरा हो पायेगा
सावन बार-बार हर बार नहीं आयेगा
उठ आई .....

मत स्वर्णिम अवसर गवाँ मानव
अपना आकार नित बढ़ा रहा सूखारूपी दानव
बूँद-बूँद अमृत, व्यर्थ न बहाना
मौका जो निकला हाथ से, फिर नहीं आना
उठ आई अम्बर में घनघोर घटा
मोर नाचते, कोयल गाती, उड़ती गोरी की लटा

संपर्क करें:
मुकेश कुमार ''ऋषि वर्मा''
ग्राम रिहावली, पोस्ट तारौली,
फतेहाबाद, आगरा,
उत्तर प्रदेश-283 111
मो. 09457879120, 09627912535